सामाजिक संगठन
(Social organization)

सामाजिक संगठन व्यक्तियों का एक समूह है जिनके सम्मिलित उद्देश्य होते। सदस्यों के बीच कार्य का बंटवारा होता। संगठन के कुछ निश्चित नियम होते हैं जिनके आधार पर व्यक्ति अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। समाज का निर्माण करनेवाली अनेक इकाइयाँ होती हैं। उनके निश्चित पद तथा कार्य होते हैं। समाज का निर्माण करने वाली विभिन्न इकाइयों में पाए जानेवाले प्रकार्यात्मक संबंध के आधार पर होता है। समाज में इन इकाइयों की अपनी एक निश्चित स्थिति होती है। इनकी स्थिति के अनुसार ही कार्यों को निर्धारित किया जाता है। जब ये इकाइयाँ अपने निर्धारित कार्यों के अनुसार क्रियाशील रहती हैं तो समाज में संगठन दिखाई देता है और इसी को सामाजिक संगठन कहा जाता है। सामाजिक संगठन व्यक्तियों का ऐसा संग्रह है। जिनके सम्मिलित उद्देश्य होते हैं।

समाज का निर्माण करने वाली इकाइयाँ होती हैं। उनके निश्चित पद होते हैं तथा निश्चित कार्य होते हैं। यदि ये इकाइयाँ अपने निश्चित पदों के अनुसार कार्य करती रहती हैं तो समाज में व्यवस्था बनी रहती है। सामाजिक संगठन को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित किये हैं। —

ऑगबर्न एवं निमकॉफ : —

एक संगठन विभिन्न कार्यों को करने वाले विभिन्न अंगो-

एक स्थिर व्यवस्था है।

[illegible] के अनुसार :— सामाजिक संरचना वह ढाँचा है जो स्थिर है [illegible] समाज के [illegible] [illegible] [illegible] के अनुसार नहीं है।

[illegible] :— [illegible] सामाजिक संरचना [illegible] है [illegible] का संयुक्त है [illegible] है [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] है [illegible]।

रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार :— [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] सामाजिक संरचना [illegible] है [illegible]।

[illegible] के अनुसार :— [illegible] [illegible] और [illegible] सामाजिक संरचना है।

[illegible] के अनुसार :— सामाजिक संरचना वह [illegible] है [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] होती है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि [illegible] सामाजिक संरचना [illegible]